गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित होता दैनिक

संपादक : श्री मनोजकुमार चंपकलाल शाह

रजी.ओफिस : टी.एफ-०१,नानकराम सुपर मार्केट,रामनगर,साबरमती,अहमदाबाद- ३८० ००५.गुजरात,भारत.

फोन /फेक्स : (०७९) २७५७ ३३०७, ९०१६३ ३३३०७ (मो) ९३२८३ ३३३०७, ९८२५३ ३३३०७, Email : • Email : garvigujarat2007@gmail.comgarvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

वर्ष : 08 | अंक : 313 | दि. 14-03-2019 गुरुवार | वि.सं. 2075 | फागण सुद -०८ | पाना : 04 | किंमत : 00.50 पैसा

रक्षा मंत्रालय ने सुप्रीम कोर्ट से कहा

फोटो कॉपी हुए दस्तावेज राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए संवेदनशील हैं

सरकार की मर्जी के बगैर राफेल के संवेदनशील दस्तावेजों की फोटो कॉपी की गई, जो चोरी से ऑफिस से बाहर ले जाया गया : रक्षा मंत्रालय

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, बहुचर्चित राफेल पेपर लीक को लेकर रक्षा मंत्रालय ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दाखिल कर कहा है कि देश की संप्रभुता के साथ समझौता हुआ है। दरअसल, शीर्ष अदालत में अटॉर्नी जनरल केके वेणुगोपाल की इस टिप्पणी ने राजनीतिक भूचाल ला दिया था कि राफेल लड़ाकू विमान के सौदे के दस्तावेज चुरा लिए गए हैं। हालांकि बाद में अटॉर्नी जनरल ने दावा किया कि राफेल दस्तावेज रक्षा मंत्रालय से चुराए नहीं गए और सुप्रीम कोर्ट में उनकी बात का मतलब यह था कि याचिकाकर्ताओं ने आवेदन में उन मूल कागजात की फोटो कॉपी का इस्तेमाल किया, जो गोपनीय हैं। इसी मामले में रक्षा मंत्रालय ने अपना पक्ष रखा है। राफेल पेपर लीक मामले में बुधवार को दाखिल हलफनामे में रक्षा मंत्रालय ने कहा कि देश की संप्रभुता के साथ समझौता हुआ है। सरकार की मर्जी के बगैर राफेल के संवेदनशील दस्तावेजों की फोटो कॉपी की गई, जो चोरी से ऑफिस से बाहर ले जाया गया। आगे कहा गया, संप्रभुता और विदेशी संबंध पर विपरीत असर हुआ है। मामले की आंतरिक जांच शुरू कर दी गई है। सुप्रीम कोर्ट को दिए हलफनामे में रक्षा मंत्रालय ने कहा कि राफेल समीक्षा केस में याचिकाकर्ताओं द्वारा सामने रखे गए दस्तावेज राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से संवेदनशील हैं, जो लड़ाकू विमान की युद्धक क्षमता से संबंधित है। गौरतलब है कि राफेल के दस्तावेजों के लीक होने को लेकर विपक्षी दल सरकार पर हमलावर हो गए थे। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने संवेदनशील कागजात के चोरी होने पर सरकार पर निशाना साधते हुए जांच की मांग की थी। हालांकि वेणुगोपाल ने स्थिति को संभालने का प्रयास करते हुए कहा था, मुझे बताया गया कि विपक्ष ने आरोप लगाया है कि (सुप्रीम कोर्ट में) दलील दी गई कि फाइलें रक्षा मंत्रालय से चोरी हो गईं। यह पूरी तरह से गलत है। यह बयान कि फाइलें चोरी हो गई हैं, पूरी तरह से गलत है। वेणुगोपाल ने कहा कि राफेल सौदे की जांच का अनुरोध ठुकराने के शीर्ष अदालत के आदेश पर पुनर्विचार की मांग वाली यशवंत सिन्हा, अरुण शौरी और प्रशांत भूषण की याचिका में ऐसे तीन दस्तावेजों को नत्थी किया गया है जो असली दस्तावेजों की फोटो कॉपी हैं। आधिकारिक सूत्रों ने कहा था कि अटॉर्नी जनरल द्वारा 'चोरी' शब्द का इस्तेमाल संभवत: 'ज्यादा सख्त' था और इससे बचा जा सकता था।

बीजेपी पहुंची चुनाव आयोग, राहुल की शिकायत

बंगाल को अतिसंवेदनशील क्षेत्र घोषित करने की मांग

राहुल गांधी के अहमदाबाद दौरे में दिए भाषण में पीएम मोदी के बारे में की टिप्पणी को लेकर शिकायत की

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, लोकसभा चुनावों के तारीखों के ऐलान के साथ ही पार्टियां अपनी रणनीति को लेकर ऐक्टिव हैं। बीजेपी ने चुनाव आयोग जाकर बंगाल में होनेवाली हिंसा को ध्यान रखते हुए अतिसंवेदनशील क्षेत्र घोषित करने की मांग की। साथ ही राहुल गांधी के अहमदाबाद दौरे में दिए भाषण में पीएम मोदी के बारे में की टिप्पणी को लेकर शिकायत की। केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद के साथ बीजेपी के कई बड़े नेताओं ने चुनाव आयोग दफ्तर जाकर ईसी से शिकायत की। चुनाव आयोग से निकलते हुए केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा, बंगाल में चुनावों के दौरान होनेवाली हिंसा के कारण बहुत से लोग प्रभावित हुए हैं। बंगाल में हो रही हिंसा की आशंका देखते हुए हमने चुनाव आयोग से पूरे बंगाल को अतिसंवेदनशील क्षेत्र घोषित करने की मांग की। सभी बूथ केंद्रों पर केंद्रीय पुलिस बल तैनात करने की भी मांग की। बंगाल में चुनावों के दौरान मीडिया पर भी पाबंदी अघोषित तौर पर रहती है। हमने मीडिया को प्रवेश मिले इसकी भी मांग की। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने मंगलवार को अहमदाबाद रैली में पीएम के बारे में कहा था कि पीएम ने राफेल डील में देश का पैसा अनिल अंबानी की जेब में डाला। इस बयान की भी शिकायत बीजेपी ने चुनाव आयोग में की। केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा, राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री के बारे में जो बोला...

इतना पैसा उसकी जेब में डाला... मैं तो वह दोहरा भी नहीं सकता। हमने इस बयान की शिकायत कर आयोग से संज्ञान लेने की अपील की है। राहुल गांधी ने अहमदाबाद में मंगलवार को एक रैली में कहा था, २०१४ के चुनाव में मोदीजी ने कहा था कि चौकीदार बनाओ, पीएम नहीं। ये देखिए मैंने चौकीदार शब्द बोला और लोग चोर बोल रहे हैं। हर स्टेज से मोदी देशभक्ति की बात करते हैं। वायुसेना की प्रशंसा करते हैं लेकिन वह देश को यह नहीं बताते कि वह वायुसेना की जेब से ३० हजार करोड़ चोरी करके पीएम मोदी ने अनिल अंबानी की जेब में क्यों डाला।

नरेन्द्र मोदी पर राहुल गांधी का हमला

पीएम मोदी में सवालों का सामने करने का साहस नहीं

राहुल गांधी ने यह आरोप लगाया कि बीजेपी ने भारतीय जवानों को सुरक्षित करने के लिए कुछ नहीं किया

(संपूर्ण समाचार सेवा) चेन्नै, लोकसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान होते ही राजनेताओं में जुबानी जंग तेज हो गई है। कांग्रेस और बीजेपी के नेता एक दूसरे पर निशाना साधने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं। इस क्रम में कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने चेन्नै में प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और बीजेपी पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी में सवालों का सामने करने का साहस नहीं है। वह सवालों को क्यों नहीं लेते हैं? राहुल ने यह भी आरोप लगाया कि बीजेपी ने भारतीय जवानों को सुरक्षित करने के लिए कुछ नहीं किया। पुलवामा हमले का जिक्र करते हुए राहुल ने फिर कहा कि हमले के आर्किटेक्ट मसूद अजहर को एनडीए सरकार ने उस वक्तक्यों छोड़ा था? कांग्रेस चीफ ने कहा, बीजेपी और आरएसएस के खिलाफ हमारी विचारधारा की लड़ाई है। आखिर मोदी जी बात क्यों नहीं करते? वह मुझसे भले ही बात न करें, लेकिन वह प्रेस से भी बात नहीं करते हैं। वह सवालों से डरे रहते हैं। ऐसा क्यों है कि सारे विपक्षी नेताओं को प्रेस कॉन्फ्रेंस करना पसंद है, लेकिन पीएम कभी कोई प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं करते। राहुल ने गठबंधन पर कहा, कांग्रेस कई राज्यों में स्थानीय पार्टियों के साथ गठबंधन पर बात कर रही है। तमिलनाडु, महाराष्ट्र और झारखंड में गठबंधन मजबूत है। बिहार में गठबंधन पर बातचीत फाइनल है। जम्मू-कश्मीर में गठबंधन पर बातचीत अंतिम चरण में है। हम जल्द इस बारे में औपचारिक तौर पर कुछ कह पाएंगे।गठबंधन कांग्रेस

के पास नहीं है ऐसा कहना गलत होगा, क्योंकि दरअसल बीजेपी के पास गठबंधन नहीं है। उन्होंने कहा, तमिलनाडु की जनता के साथ धोखा हो रहा है। दरअसल तमिलनाडु को दिल्ली से कंट्रोल किया जा रहा है। नरेन्द्र मोदी तमिलनाडु की सरकार चला रहे हैं। राहुल ने चुनावी मुद्दे गिनाते हुए कहा कि इस बार जीएसटी, बेरोजगारी, जॉब क्रिएशन, किसानों के मुद्दे जैसे कई मामले प्रमुख हैं। उन्होंने कहा, मुझे याद है कि तमिलनाडु के किसानों ने जंतर-मंतर में कितना मार्मिक प्रदर्शन किया था लेकिन सरकार के पास उनसे बातचीत का वक्तनहीं था। पुलवामा हमले में राहुल ने कहा, जिस हमले में ४० जवानों की नृशंस हत्या हुई थी, उस हमले के आर्किटेक्ट को १९९९ में एनडीए ने क्यों छोड़ा था, इसे स्पष्ट करने की जरूरत है। इससे पता लगता है कि बीजेपी को आतंकियों से कितनी हमदर्दी है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा दल के अजीत डोभाल भी उस डील में शामिल थे। सच्चाई है कि केंद्र सरकार जवानों को सुरक्षा नहीं दे पा रही है।

रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण बोलीं

पाकिस्तान के एफ-१६ पायलट की पहचान पता है

करगिल संघर्ष में दौरान मारे गए सैनिकों की तरह इस बार F-16 विमान और पायलट को खोने को स्वीकार नहीं करेगा

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, भारत विंग कमांडर अभिनंदन द्वारा मार गिराए गए पाकिस्तान के F-16 के विमान के पायलट की पहचान जानता है। हालांकि नई दिल्ली ने इसके बारे में अधिक जानकारी देने से इनकार कर दिया। रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को कहा कि भारत के पास पाकिस्तानी पायलट की जानकारी है। हालांकि मंत्री ने इस बारे में ज्यादा नहीं बताया। बता दें कि विंग कमांडर अभिनंदन ने मिग-२१ बाइसन से पाकिस्तान के लड़ाकू विमान F-16 को मार गिराया था। हालांकि इस डॉगफाइड में अभिनंदन का विमान भी क्रैश हो गया था। सीतारमण ने कहा कि पाकिस्तान करगिल संघर्ष में दौरान मारे गए अपने सैनिकों की तरह इस बार भी अपने F-16 विमान और पायलट को खोने को स्वीकार नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि F-16 के पायलट को स्थानीय लोगों पीटा था और संभवत: अस्पताल में उसकी मौत हो गई। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान लगातार इससे इनकार कर रहा है। पाकिस्तान सेना के कब्जे में रहने के दौरान मानसिक प्रताड़ना झेलने वाले विंग कमांडर अभिनंदन के बारे में पूछने पर सीतारमण ने कहा, उनका जोश हाई है। इतना सब होने के बाद भी वह शांत थे। अभिनंदन बोले कि उन्होंने अपनी ड्यूटी निभाई और उन्हें इस तरह की स्थिति के लिए ट्रेंड किया जाता है। उन्होंने पाकिस्तान को काफी नुकसान पहुंचाया। रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को कहा कि भारत के पास पाकिस्तानी पायलट की जानकारी है। हालांकि मंत्री ने इस बारे में ज्यादा नहीं बताया। बता दें कि विंग कमांडर अभिनंदन ने मिग-२१ बाइसन से पाकिस्तान के लड़ाकू विमान F-16 को मार गिराया था। बता दें कि भारत द्वारा बालाकोट में जैश के ठिकानों पर किए गए एयर स्ट्राइक के बाद पाकिस्तान के स्न-१६ लड़ाकू विमानों ने भारतीय सीमा में घुसपैठ की कोशिश की थी। विंग कमांडर अभिनंदन ने मिग-२१ बाइसन से पाकिस्तानी विमान का पीछा कर उसे मार गिराया था। स्न-१६ का पायलट सीमा पार कूदा था।

असम में साथ लड़ेंगी बीजेपी-एजीपी

अब पूर्वोत्तर के रूठे साथी को बीजेपी ने मना लिया

(संपूर्ण समाचार सेवा) गुवाहाटी, महाराष्ट्र, पंजाब और बिहार में अपने नाराज साथियों के मनाने के बाद बीजेपी अब संवेदनशील असम में भी इस कोशिश में कामयाब हो गई है। विवादित नागरिकता (संशोधन) विधेयक के मुद्दे पर दो महीने पहले बीजेपी से अपने संबंध तोड़ने के बाद असम गण परिषद (एजीपी) अब भगवा दल के साथ मिलकर लोकसभा चुनाव लड़ेगी। बीजेपी महासचिव राम माधव, एजीपी अध्यक्ष अतुल बोरा और अन्य के साथ देर रात तक चली बैठक में गठबंधन को अंतिम रूप दिया गया। बुधवार सुबह बीजेपी के पूर्वोत्तर प्रभारी माधव ने ट्वीट किया, बैठक के बाद बीजेपी और एजीपी ने आने वाले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को हराने के लिए साथ काम करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा, गुवाहाटी में बीजेपी के नेता हेमंत विश्व शर्मा और एजीपी के अतुल बोरा और केशव महंत की उपस्थिति में यह घोषणा हुई। माधव ने बताया कि गठबंधन में तीसरा सहयोगी बोडोलैंड पीपल्स फ्रंट (बीपीएफ) है।

संजय भंडारी से कनेक्शन पर स्मृति का राहुल पर वार

साले साहब बताएं कि रक्षा सौदों में इतनी रुचि क्यों

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, एक न्यूज वेबसाइट की रिपोर्ट में राहुल गांधी और हथियार सौदों के दलाल संजय भंडारी के बीच कथित संबंध बताए जाने पर केंद्रीय मंत्री स्मृति ने निशाना साधा है। स्मृति ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि राफेल फाइलों को लेकर यह स्पष्ट हुआ है कि संजय भंडारी की रक्षा मंत्रालय से फाइलें चोरी करने और फिर उन्हें डिफेंस कॉन्ट्रैक्टर्स तक पहुंचाने में भूमिका थी। स्मृति ने मीडिया रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि लंदन में वाड्रा की बेनामी संपत्ति की जांच में संजय भंडारी से उनके रिश्तों की बात साबित हुई है। संजय भंडारी से जुड़े एचएल पहवा से कथित तौर पर राहुल के जमीन खरीदने और फिर महंगे दामों पर बेचने की बात भी इस मीडिया रिपोर्ट में कही गई है। पहवा के संजय भंडारी से ताल्लुक बताए गए हैं। स्मृति इरानी ने कहा, राहुल गांधी अब रॉबर्ट वाड्रा के पीछे छिपने का प्रयास कर रहे हैं। यही नहीं इरानी ने सीधे प्रियंका गांधी वाड्रा पर भी सीधे तौर पर वार किया। इरानी ने कहा, एच एल पाहवा के यहां हुई रेड में चौंकाने वाली बात यह है कि उनके पास जमीन की खरीद फरोख्त के लिए पैसे नहीं थे। राहुल गांधी और श्रीमती वाड्रा के लिए जमीन खरीदने के लिए सी सी थंपी ने ५० करोड़ से ज्यादा रुपये दिए। इरानी ने कहा था कि पहवा और थंपी के भंडारी से संबंध रहे हैं और यह जगजाहिर हैं। स्मृति ने राहुल पर तीखा तंज कसते हुए कहा, साले साहब खुद जनता को बताएं कि रक्षा सौदों में उनकी इतनी रुचि क्यों है। वो बताएं कि क्या देश की सुरक्षा को चंद रुपये के लिए, जमीन के लिए राहुल गांधी ने क्या शहीद करने का प्रयास किया? मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि भंडारी ने राफेल सौदे में शामिल होने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन फ्रांसीसी कंपनी ने इसे खारिज कर दिया। स्मृति इरानी ने कहा, देश को यह समझ आ गया है कि रक्षा सौदों में राहुल गांधी का दखल सिर्फ अपने राजनीतिक हितों के लिए ही नहीं बल्कि अपने निजी और पारिवारिक व्यवसायिक हितों को पूरा करने के लिए भी रहा। स्मृति इरानी ने कहा कि नए तथ्यों से यह स्पष्ट तौर पर स्थापित हुआ है कि राहुल गांधी और आर्म्स डीलर संजय भंडारी के बीच संबंध रहे हैं।

संपादकिय

धनबल का बोलबाला

आम चुनाव की तारीखों के ऐलान के साथ ही देश में चुनाव सुधार के मुद्दे फिर से चर्चा में आ गए हैं। काले धन पर रोक लगाने और नकदी का लेन–देन घटाने के लिए ढाई साल पहले नोटबंदी जैसा ऐतिहासिक कदम उठाया गया था। इसके बावजूद कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि इस बार चुनावी खर्च के सारे रिकॉर्ड टूटने वाले हैं। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज (सीएमसी) के अनुसार, इस चुनाव में 50 हजार करोड़ रुपए तक खर्च हो सकते हैं। कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनैशनल पीस के मुताबिक, साल 2019 का भारतीय आम चुनाव अमेरिकी चुनावी खर्च को भी पीछे छोड़ देगा। इसने ब्यौरा दिया है कि 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव और संसदीय चुनावों में 650 करोड़ डॉलर(मौजूदा विनिमय दर के अनुसार 46,211 करोड़ रुपये) खर्च हुए थे। इसके बरक्स भारत में 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में 35,547 करोड़ रुपये (500 करोड़ डॉलर) खर्च हुए थे। लेकिन भारतीय आम चुनाव–2019 में अमेरिकी चुनावों के खर्च का आंकड़ा आसानी से पार हो सकता है। ऐसा हुआ तो यह दुनिया का सबसे खर्चीला चुनाव होगा। देश में चुनावों पर होने वाले अथाह खर्च को भारतीय जनतंत्र की एक बड़ी बीमारी के रूप में देखा जाता है। इसमें भारी मात्रा में काले धन का लेन–देन होना एक बात है, पर इससे भी बुरी बात यह है कि साधारण भारतीय जन चुनाव प्रक्रिया से बाहर हो गए हैं और व्यवस्था तेजी से धनवानों के कब्जे में जा रही है। यही नहीं, चुनाव में भारी रकम फूंकने की बाध्यता ने राजनीतिक नेतृत्व को भ्रष्ट बनाया है, जिसके चलते संतुलनकारी शक्ति के रूप में उसकी भूमिका संदिग्ध हो गई है। इस समस्या से निपटने के लिए चुनाव आयोग ने खर्च सीमा तय करने और चंदे की व्यवस्था में पारदर्शिता लाने की पहल की लेकिन उसके हर कदम का तोड़ पार्टियों ने निकाल लिया। दिखाने के लिए उन्होंने आय–व्यय के आंकड़े जरूर पेश किए, पर इस मामले में पारदर्शिता बरतने पर कतई राजी नहीं हुईं। अभी हर लोकसभा प्रत्याशी के चुनाव खर्च की सीमा 70 लाख रुपए तय की गई है, जो 2014 में 28 लाख थी। खर्च के लिए एक बार में 10 हजार रुपए से अधिक नगद राशि कोई उम्मीदवार किसी को नहीं दे पाएगा। प्रत्याशी को नया बैंक खाता खुलवाना पडेगा, जिसकी जानकारी जिला निर्वाचन दफ्तर को देनी होगी। इस समस्या से निपटने के लिए चुनाव आयोग ने खर्च सीमा तय करने और चंदे की व्यवस्था में पारदर्शिता लाने की पहल की लेकिन उसके हर कदम का तोड़ पार्टियों ने निकाल लिया। लिकिन ये सारे निर्देश व्यवहार में किस हद तक लागू होंगे, इसका कुछ अंदाजा चुनाव तिथियों की घोषणा से ठीक पहले आई विज्ञापनों की बाढ़ को देखकर लगाया जा सकता है। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) जैसी संस्थाएं चुनाव के बाद बताती हैं कि अमुक पार्टी ने इतने खर्च किए या इतने बाहुबली चुनाव जीत गए। अपनी इस भूमिका को लेकर चुनाव के दौरान भी उन्हें सचेत रहना चाहिए। नियमों का उल्लंघन होते ही उन पर चर्चा हो तो शायद हालात बदलें।

इसरो ने देश–दुनिया के सैकडों उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण किया

(जी.एन.एस.) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो ने देश–दुनिया के सैकडों उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण करके साबित किया है कि तेजी से बडते अंतरिक्ष बाजार में अब उसका कोई मुकाबला नहीं है, पर जब बात दुश्मन देशों से अपनी रक्षा करने और आतंकवाद से लोहा लेने की हो तो उसमें भी इसरो के उपग्रहों की एक शानदार भूमिका हो सकती है–यह बात हाल में (26 फरवरी, 2019 को) पाकिस्तान स्थित बालाकोट में आतंकी संगठन जैश–ए–मोहम्मद के प्रशिक्षण शिविर पर भारतीय हवाई हमले से साबित हुई है। इसे लेकर भले ही पाकिस्तान और अपने देश में विपक्षी दल यह विवाद खडे कर रहे हों कि इस हमले में भारत सरकार मारे गए आतंकियों की सही संख्या नहीं बता पा रही है, पर जिन्हें वायुसेना और खास तौर से इसरो की काबिलियत पर भरोसा है, वे जानते हैं कि मिराज–2000 विमानों से रात के अंधेरे में किए गए इन हवाई हमलों की सटीकता कितनी अधिक रही होगी। जब कभी दो पडोसी देशों के बीच सैन्य ताकत की तुलना होती है तो अक्सर यह सैनिकों की तादाद के अलावा लडाकू विमानों, जंगी जहाजों, टैंकों और मिसाइलों और मारक क्षमता तक सीमित रह जाती है। इसमें विज्ञान के उन दूसरे क्षेत्रों की तरक्की को नहीं जोडा जाता है, जिनकी मदद से किसी भी आकलन और हमले की स्थिति में देश को बडत हासिल होती है। वस्तुत- भारत की सैन्य तैयारियों के संबंध में आज यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि लडाकू विमान, टैंक–तोपें और जंगी जहाज ही नहीं, बल्कि आसमान में तैनात इसके दर्जनों उपग्रह इसे ऐसी ताकत दे रहे हैं जिसका कोई मुकाबला पाकिस्तान हरगिज नहीं कर सकता है। आसमान में हर वक्त चौकसी कर रहे इसरो के उपग्रह प ?सी मुल्क के चप्पे–चप्पे की खबर रख रहे हैं। यही नहीं, अब तो यह दावा भी किया जा रहा है कि भारत अपने उपग्रहों के जरिए पाकिस्तान के 87 फीसद क्षेत्र यानी कुल 8.8 लाख वर्ग किलोमीटर में से 7.7 लाख वर्ग किलोमीटर इलाके पर पैनी नजर रखने में सक्षम हो गया है। इससे भारत जब चाहे, पाकिस्तान के सामरिक इलाकों की गतिविधियों को देख सकता है और अपने उपग्रहों के जरिये महत्वपूर्ण नक्शे और तस्वीरें हासिल कर सकता है। वैसे तो अन्य स्पेस एजेंसी की तरह ही इसरो को दूरसंचार और मौसम की जानकारी लेने वाले उपग्रहों की तैनाती के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। दूरसंचार यानी टेलीविजन और टेलीफोन आदि जरूरतों के लिए इसरो ने कई उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं। इनके बाद प्राकृतिक आपदाओं की सूचना आदि की जानकारी संबंधी आवश्यकताओं के मद्देनजर इसरो ने उपग्रहों का एक नेटवर्क तैनात किया है जो बदलते मौसम की सूचनाएं मुहैया कराते हैं और इनकी मदद से भारतीय मौसम विभाग तमाम जानकारियां संबंधित क्षेत्रों को जारी करता है। इसी तरह विदेशी नेविगेशन सिस्टम को मुकाबला देने के लिए इसरो स्वदेशी जीपीएस के लिए भी अपने उपग्रहों का नेटवर्क तैयार कर रहा है, पर इन चीजों के अलावा आज महत्व सैन्य और जासूसी के मकसद से उपग्रहों की सेवाएं लेने का भी है। इस नजरिये से देखें तो पिछले पांच–छह वर्षों में इसरो ने कई ऐसे सैटेलाइट अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं, जिनकी मदद से भारत की क्षमता आस–पडोस के 14 देशों के करीब साडे 5 करोड वर्ग किलोमीटर दायरे वाले भूभाग पर सूक्ष्म नजर रखने की हो चुकी है। असल में बीते करीब आधे दशक में इसरो ने एक के बाद एक कई ऐसे उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं जो अपने ताकतवर उपकरणों की सहायता से जमीन का कोना–कोना खंगालते रहते हैं। खुद सेना यह स्वीकार करती है कि देश की सरहदों से लेकर पडोसी मुल्कों की जमीन पर हो रही गतिविधियों पर करीबी नजर रखने संबंधी जरूरतों का 70 फीसद हिस्सा इसरो के सैटेलाइट पूरा कर देते हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि इस वक्त इसरो के कम से कम 10 उपग्रह ऐसे हैं जो देश की सैन्य और खुफिया जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। इनमें खास तौर से कार्टोसैट सीरीज, जीसैट–7, जीसैट–7 ए, आइआरएनएसएस यानी इंडियन रीजनल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम, माइक्रोसैट, आरआइसैट और हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजिंग यानी हाइसिस सैटेलाइट का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि उडी हमले के उपरांत सितंबर 2016 में जब भारत की ओर से नियंत्रण रेखा पार कर भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया था तो उसमें एक अहम रोल कार्टोसैट सीरीज के उपग्रहों ने निभाया था। इन उपग्रहों से बेहद बारीक डिटेल्स के साथ फोटो उपलब्ध कराए गए थे, जिनके विश्लेषण के बाद सेना को जमीनी हालात का आकलन करने और हमले की सर्वाधिक उपयुक्त जगह एवं समय का चुनाव करने में मदद मिली थी।वैसे तो कार्टोसैट सीरीज की शुरुआत वर्ष 2005 में ही हो गई थी, लेकिन सैन्य महत्व के उपग्रहों के सिलसिले की बात करें तो इसका आरंभ वर्ष 2007 में कार्टोसैट–2ए के प्रक्षेपण से हुआ था। यह दोहरे उपयोग वाला उपग्रह था जो मौसम की जानकारियां बटोरने के साथ भारत के अ ?स–प ?स में मिसाइलों के हर मूवमेंट पर नजर रख सकता था। इसके बाद जून 2012 में छो ? गए कार्टोसैट–2सी से प ?सी देशों के संवेदनशील ठिकानों के वीडियो रिकॉर्ड करने और उसका विश्लेषण कर उन्हें वापस धरती पर भेजने की सुविधा देश को मिल गई। इसी सीरीज में अगला उपग्रह कार्टोसैट–2ई था जो जून 2017 में छो ?ा गया। इनके अलावा कई अन्य सैटेलाइट और हैं जिनसे दूसरे किस्म की बेहद जरूरी और संवेदनशील सूचनाएं देश और सेना को मिलती हैं। जैसे एक जुलाई 2013 और 12 अप्रैल, 2018 को अंतरिक्ष में भेजे गए आइआरएनएसएस सीरीज के उपग्रहों से देश की सरहद के 1600 किलोमीटर इलाके की बारीक निगरानी की जाती है और विशेष मिसाइलों की तैनाती और उनके मूवमेंट की थाह इनके जरिये ली जाती है। इसी तरह 30 अगस्त, 2013 को प्रक्षेपित जीसैट–7 से भारतीय नौसेना को अपनी संचार संबंधी जरूरतें और समुद्री सीमा की निगरानी करने में बहुत मदद मिलती है। इसके बाद 19 दिसंबर, 2018 को अंतरिक्ष में भेजे गए जीसैट–7ए से भारतीय वायुसेना को अपनी संचार संबंधी जरूरतें पूरा करने में बहुत मदद मिली। यह एक बेहद उच्च क्षमता वाला सैन्योपयोगी उपग्रह है जो मिसाइलों और विमानों की हलचलों पर बारीक नजर रखने के साथ–साथ उड रहे विमानों के बीच हो रहे संवाद–संचार को पकड सकता है और फौरन उसकी जानकारी जमीन पर मौजूद सेंटर को दे सकता है। यह ड्रोन को कंट्रोल करते हुए उन्हें दुश्मन के इलाके में हमले के लिए भेज सकता है और दुश्मन के ड्रोन पर नजर भी रख सकता है। हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजिंग सैटेलाइट यानी हाइसिस को 28 नवंबर, 2018 को छोडा गया था और इससे रात के अंधेरे में भी तस्वीरें खींचकर जमीन के कुछ सेंटीमीटर जितने हिस्से की सूक्ष्म निगरानी की जा सकती है। यहां तक कि जमीन में दबाई गई बारूदी सुरंगों और आईईडी का भी हाइसिस से पता लगाया जा सकता है। इनके अलावा इसी साल 23 जनवरी, 2019 को प्रक्षेपित उपग्रह माइक्रोसैट–आर को इस मायने में खास कहा जा सकता है कि इसका निर्माण विशुद्ध रूप से सैन्य उद्देश्यों के लिए डीआरडीओ ने किया है। यह एक अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट है यानी इससे जमीनी हलचलों की बेहद सूक्ष्म जानकारी ली जा सकती है। यह उपग्रह सेना को हालात के मुताबिक योजना बनाने और दुश्मन की गतिविधि की निगरानी करने में मदद देता है। जब कभी दो पडोसी देशों के बीच सैन्य ताकत की तुलना होती है तो अक्सर यह सैनिकों की तादाद के अलावा लडाकू विमानों, जंगी जहाजों, टैंकों और मिसाइलों और मारक क्षमता तक सीमित रह जाती है। इसमें विज्ञान के उन दूसरे क्षेत्रों की तरक्की को नहीं जोडा जाता है, जिनकी मदद से किसी भी आकलन और हमले की स्थिति में देश को बडत हासिल होती है। वस्तुत- भारत की सैन्य तैयारियों के संबंध में आज यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि लडाकू विमान, टैंक–तोपें और जंगी जहाज ही नहीं, बल्कि आसमान में तैनात इसके दर्जनों उपग्रह इसे ऐसी ताकत दे रहे हैं जिसका कोई मुकाबला पाकिस्तान हरगिज नहीं कर सकता है। आसमान में हर वक्त चौकसी कर रहे इसरो के उपग्रह पडोसी मुल्क के चप्पे–चप्पे की खबर रख रहे हैं। यही नहीं, अब तो यह दावा भी किया जा रहा है कि भारत अपने उपग्रहों के जरिए पाकिस्तान के 87 फीसद क्षेत्र यानी कुल 8.8 लाख वर्ग किलोमीटर में से 7.7 लाख वर्ग किलोमीटर इलाके पर पैनी नजर रखने में सक्षम हो गया है। इससे भारत जब चाहे, पाकिस्तान के सामरिक इलाकों की गतिविधियों को देख सकता है और अपने उपग्रहों के जरिये महत्वपूर्ण नक्शे और तस्वीरें हासिल कर सकता है। वैसे तो अन्य स्पेस एजेंसी की तरह ही इसरो को दूरसंचार और मौसम की जानकारी लेने वाले उपग्रहों की तैनाती के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। दूरसंचार यानी टेलीविजन और टेलीफोन आदि जरूरतों के लिए इसरो ने कई उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं। इनके बाद प्राकृतिक आपदाओं की सूचना आदि की जानकारी संबंधी आवश्यकताओं के मद्देनजर इसरो ने उपग्रहों का एक नेटवर्क तैनात किया है जो बदलते मौसम की सूचनाएं मुहैया कराते हैं और इनकी मदद से भारतीय मौसम विभाग तमाम जानकारियां संबंधित क्षेत्रों को जारी करता है। इसी तरह विदेशी नेविगेशन सिस्टम को मुकाबला देने के लिए इसरो स्वदेशी जीपीएस के लिए भी अपने उपग्रहों का नेटवर्क तैयार कर रहा है, पर इन चीजों के अलावा आज महत्व सैन्य और जासूसी के मकसद से उपग्रहों की सेवाएं लेने का भी है। इस नजरिये से देखें तो पिछले पांच–छह वर्षों में इसरो ने कई ऐसे सैटेलाइट अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं, जिनकी मदद से भारत की क्षमता आस–पडोस के 14 देशों के करीब साडे 5 करोड वर्ग किलोमीटर दायरे वाले भूभाग पर सूक्ष्म नजर रखने की हो चुकी है। असल में बीते करीब आधे दशक में इसरो ने एक के बाद एक कई ऐसे उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं जो अपने ताकतवर उपकरणों की सहायता से जमीन का कोना–कोना खंगालते रहते हैं। खुद सेना यह स्वीकार करती है कि देश की सरहदों से लेकर पडोसी मुल्कों की जमीन पर हो रही गतिविधियों पर करीबी नजर रखने संबंधी जरूरतों का 70 फीसद हिस्सा इसरो के सैटेलाइट पूरा कर देते हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि इस वक्त इसरो के कम से कम 10 उपग्रह ऐसे हैं जो देश की सैन्य और खुफिया जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। इनमें खास तौर से कार्टोसैट सीरीज, जीसैट–7, जीसैट–7 ए, आइआरएनएसएस यानी इंडियन रीजनल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम, माइक्रोसैट, आरआइसैट और हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजिंग यानी हाइसिस सैटेलाइट का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि उडी हमले के उपरांत सितंबर 2016 में जब भारत की ओर से नियंत्रण रेखा पार कर भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया था तो उसमें एक अहम रोल कार्टोसैट सीरीज के उपग्रहों ने निभाया था। इन उपग्रहों से बेहद बारीक डिटेल्स के साथ फोटो उपलब्ध कराए गए थे, जिनके विश्लेषण के बाद सेना को जमीनी हालात का आकलन करने और हमले की सर्वाधिक उपयुक्त जगह एवं समय का चुनाव करने में मदद मिली थी।वैसे तो कार्टोसैट सीरीज की शुरुआत वर्ष 2005 में ही हो गई थी, लेकिन सैन्य महत्व के उपग्रहों के सिलसिले की बात करें तो इसका आरंभ वर्ष 2007 में कार्टोसैट–2ए के प्रक्षेपण से हुआ था। यह दोहरे उपयोग वाला उपग्रह था जो मौसम की जानकारियां बटोरने के साथ भारत के अडोस–पडोस में मिसाइलों के हर मूवमेंट पर नजर रख सकता था। इसके बाद जून 2012 में छोडे गए कार्टोसैट–2सी से पडोसी देशों के संवेदनशील ठिकानों के वीडियो रिकॉर्ड करने और उसका विश्लेषण कर उन्हें वापस धरती पर भेजने की सुविधा देश को मिल गई। इसी सीरीज में अगला उपग्रह कार्टोसैट–2ई था जो जून 2017 में छोडा गया। इनके अलावा कई अन्य सैटेलाइट और हैं जिनसे दूसरे किस्म की बेहद जरूरी और संवेदनशील सूचनाएं देश और सेना को मिलती हैं। जैसे एक जुलाई 2013 और 12 अप्रैल, 2018 को अंतरिक्ष में भेजे गए आइआरएनएसएस सीरीज के उपग्रहों से देश की सरहद के 1600 किलोमीटर इलाके की बारीक निगरानी की जाती है और विशेष मिसाइलों की तैनाती और उनके मूवमेंट की थाह इनके जरिये ली जाती है।इसी तरह 30 अगस्त, 2013 को प्रक्षेपित जीसैट–7 से भारतीय नौसेना को अपनी संचार संबंधी जरूरतें और समुद्री सीमा की निगरानी करने में बहुत मदद मिलती है। इसके बाद 19 दिसंबर, 2018 को अंतरिक्ष में भेजे गए जीसैट–7ए से भारतीय वायुसेना को अपनी संचार संबंधी जरूरतें पूरा करने में बहुत मदद मिली।हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजिंग सैटेलाइट यानी हाइसिस को 28 नवंबर, 2018 को छोडा गया था और इससे रात के अंधेरे में भी तस्वीरें खींचकर जमीन के कुछ सेंटीमीटर जितने हिस्से की सूक्ष्म निगरानी की जा सकती है। यहां तक कि जमीन में दबाई गई बारूदी सुरंगों और आईईडी का भी हाइसिस से पता लगाया जा सकता है। इनके अलावा इसी साल 23 जनवरी, 2019 को प्रक्षेपित उपग्रह माइक्रोसैट–आर को इस मायने में खास कहा जा सकता है कि इसका निर्माण विशुद्ध रूप से सैन्य उद्देश्यों के लिए डीआरडीओ ने किया है। यह एक अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट है यानी इससे जमीनी हलचलों की बेहद सूक्ष्म जानकारी ली जा सकती है। यह उपग्रह सेना को हालात के मुताबिक योजना बनाने और दुश्मन की गतिविधि की निगरानी करने में मदद देता है। जब कभी दो पडोसी देशों के बीच सैन्य ताकत की तुलना होती है तो अक्सर यह सैनिकों की तादाद के अलावा लडाकू विमानों, जंगी जहाजों, टैंकों और मिसाइलों और मारक क्षमता तक सीमित रह जाती है। इसमें विज्ञान के उन दूसरे क्षेत्रों की तरक्की को नहीं जोडा जाता है, जिनकी मदद से किसी भी आकलन और हमले की स्थिति में देश को बडत हासिल होती है। वस्तुत- भारत की सैन्य तैयारियों के संबंध में आज यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि लडाकू विमान, टैंक–तोपें और जंगी जहाज ही नहीं, बल्कि आसमान में तैनात इसके दर्जनों उपग्रह इसे ऐसी ताकत दे रहे हैं जिसका कोई मुकाबला पाकिस्तान हरगिज नहीं कर सकता है। आसमान में हर वक्त चौकसी कर रहे इसरो के उपग्रह पडोसी मुल्क के चप्पे–चप्पे की खबर रख रहे हैं। यही नहीं, अब तो यह दावा भी किया जा रहा है कि भारत अपने उपग्रहों के जरिए पाकिस्तान के 87 फीसद क्षेत्र यानी कुल 8.8 लाख वर्ग किलोमीटर में से 7.7 लाख वर्ग किलोमीटर इलाके पर पैनी नजर रखने में सक्षम हो गया है। इससे भारत जब चाहे, पाकिस्तान के सामरिक इलाकों की गतिविधियों को देख सकता है और अपने उपग्रहों के जरिये महत्वपूर्ण नक्शे और तस्वीरें हासिल कर सकता है। वैसे तो अन्य स्पेस एजेंसी की तरह ही इसरो को दूरसंचार और मौसम की जानकारी लेने वाले उपग्रहों की तैनाती के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। दूरसंचार यानी टेलीविजन और टेलीफोन आदि जरूरतों के लिए इसरो ने कई उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं। इनके बाद प्राकृतिक आपदाओं की सूचना आदि की जानकारी संबंधी आवश्यकताओं के मद्देनजर इसरो ने उपग्रहों का एक नेटवर्क तैनात किया है जो बदलते मौसम की सूचनाएं मुहैया कराते हैं और इनकी मदद से भारतीय मौसम विभाग तमाम जानकारियां संबंधित क्षेत्रों को जारी करता है। इसी तरह विदेशी नेविगेशन सिस्टम को मुकाबला देने के लिए इसरो स्वदेशी जीपीएस के लिए भी अपने उपग्रहों का नेटवर्क तैयार कर रहा है, पर इन चीजों के अलावा आज महत्व सैन्य और जासूसी के मकसद से

खिसियाई पाकिस्तानी वायुसेना ने भारत पर पलटवार किया

बालाकोट में भारतीय वायुसेना की साहसिक और पाकिस्तान के साथ दुनिया को हैरान कर देने वाली कार्रवाई के बाद जब खिसियाई पाकिस्तानी वायुसेना ने भारत पर पलटवार किया तब सोशल मीडिया में इस तरह की मांग जोर–शोर से छिडी कि जंग के लिए न कहें– से नो टू वार। जंग से बचने की मांग करने में कुछ भी गलत नहीं।जंग से मसले हल होने की गारंटी नहीं, लेकिन इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कभी–कभी ऐसे हालात भी बन जाते हैं जब जंग से बचना मुश्किल हो जाता है। शायद 1971 में ऐसा ही हुआ था। इस सबके बावजूद जंग से बचने की हर संभव कोशिश होनी चाहिए–इसलिए और भी, क्योंकि भारत और पाकिस्तान के बीच जंग छिडने की स्थिति में उसके बेलगाम हो जाने का खतरा है। इस खतरे की अनदेखी करना ठीक नहीं, लेकिन क्या हम इसकी अनदेखी कर दें कि कश्मीर में एक जंग पहले से जारी है। देश के इस हिस्से में पाकिस्तान पोषित और प्रायोजित आतंकवाद को छद्म युद्ध की संज्ञा दी जाती है, लेकिन छद्म युद्ध का यह मतलब नहीं कि यह युद्ध के मुकाबले कम गंभीर है। इसकी गंभीरता को इससे समझा जा सकता है कि पुलवामा में भीषण आतंकी हमले में 40 सीआरपीएफ जवानों की शहादत के बाद से कम से कम एक दर्जन जवान आतंकियों से लोहा लेते हुए अपना बलिदान दे चुके हैं। पुलवामा हमले में शामिल रहे आतंकी के साथियों को मार गिराने में पुलवामा में ही मेजर विभूति कुमार ढौंडियाल समेत पांच जवान खेत रहे। उनकी शहादत का समाचार तब आया जब उनके गृहराज्य उत्तराखंड में शहीद मेजर चित्रेश बिष्ट के अंतिम संस्कार की तैयारी हो रही थी। चित्रेश भी कश्मीर में शहीद हुए थे। इसके चंद दिनों बाद हंदवाडा में सीआरपीएफ के एक इंस्पेक्टर समेत पांच जवानों को बलिदान देना पडा।कश्मीर में 1989–90 से ही पाकिस्तान की ओर से थोपा गया भीषण छद्म युद्ध जारी है। छिपकर और छल से ल ?ा जाने वाला यह छद्म युद्ध भारत के लिए कितना महंगा और एक तरह से युद्ध सरीखा साबित हो रहा, इसे इससे समझा जा सकता है कि बीते तीस सालों यानी 1989 से लेकर 24 फरवरी 2019 तक कश्मीर में सेना, अर्धसैनिक सुरक्षा बलों और जम्मू–कश्मीर पुलिस के छह हजार से अधिक जवानों को बलिदान देना प ?ा है। ये सब जवान आतंकी हिंसा का शिकार हुए हैं। यह एक बडी संख्या है। इतनी ब ?ी संख्या में जवानों की शहादत तो यही कहती है कि कश्मीर में युद्ध जैसे हालात कायम हैं।क्या इस छद्म युद्ध के लिए ऐसा कुछ अभियान चला–से नो टू प्रॉक्सी वारड आखिर युद्ध की चिंता में कश्मीर में तबाही मचा रहे छद्म युद्ध को ओझल कर देना कहां तक उचित है ? पाकिस्तान कश्मीर में यह छद्म युद्ध इसीलिए छडे हुए है, क्योंकि वह आमने–सामने की लडाई में भारत के सामने टिक नहीं कह सकता। यह छद्म युद्ध उसे सस्ता पड रहा है, क्योंकि इसके लिए उसे जो उन्मादी जिहादी चाहिए वे पाकिस्तान में बहुतायत से उपलब्ध हैं। जैश और लश्कर सरीखे आतंकी संगठन केवल पाकिस्तानी सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आइएसआइ के संरक्षण में आतंकियों के प्रशिक्षण शिविर ही नहीं, बल्कि ऐसे मदरसे भी चलाते हैं जहां से भविष्य के लिए आतंकी हासिल किए जा सकें। पाकिस्तान को आतंकियों–जेहादियों की भारत में घुसपैठ भर करानी पडती है। इस खतरे की अनदेखी करना ठीक नहीं, लेकिन क्या हम इसकी अनदेखी कर दें कि कश्मीर में एक जंग पहले से जारी है। देश के इस हिस्से में पाकिस्तान पोषित और प्रायोजित आतंकवाद को छद्म युद्ध की संज्ञा दी जाती है, लेकिन छद्म युद्ध का यह मतलब नहीं कि यह युद्ध के मुकाबले कम गंभीर है। इसकी गंभीरता को इससे समझा जा सकता है कि पुलवामा में भीषण आतंकी हमले में 40 सीआरपीएफ जवानों की शहादत के बाद से कम से कम एक दर्जन जवान आतंकियों से लोहा लेते हुए अपना बलिदान दे चुके हैं। पुलवामा हमले में शामिल रहे आतंकी के साथियों को मार गिराने में पुलवामा में ही मेजर विभूति कुमार ढौंडियाल समेत पांच जवान खेत रहे। उनकी शहादत का समाचार तब आया जब उनके गृहराज्य उत्तराखंड में शहीद मेजर चित्रेश बिष्ट के अंतिम संस्कार की तैयारी हो रही थी। चित्रेश भी कश्मीर में शहीद हुए थे। इसके चंद दिनों बाद हंदवाडा में सीआरपीएफ के एक इंस्पेक्टर समेत पांच जवानों को बलिदान देना पडा।कश्मीर में 1989–90 से ही पाकिस्तान की ओर से थोपा गया भीषण छद्म युद्ध जारी है। छिपकर और छल से लडा जाने वाला यह छद्म युद्ध भारत के लिए कितना महंगा और एक तरह से युद्ध सरीखा साबित हो रहा, इसे इससे समझा जा सकता है कि बीते तीस सालों यानी 1989 से लेकर 24 फरवरी 2019 तक कश्मीर में सेना, अर्धसैनिक सुरक्षा बलों और जम्मू–कश्मीर पुलिस के छह हजार से अधिक जवानों को बलिदान देना प ?ा है। ये सब जवान आतंकी हिंसा का शिकार हुए हैं। यह एक बडी संख्या है। इतनी ब ?ी संख्या में जवानों की शहादत तो यही कहती है कि कश्मीर में युद्ध जैसे हालात कायम हैं।क्या इस छद्म युद्ध के लिए ऐसा कुछ अभियान चला–से नो टू प्रॉक्सी वारड आखिर युद्ध की चिंता में कश्मीर में तबाही मचा रहे छद्म युद्ध को ओझल कर देना कहां तक उचित है ?इन पाकिस्तान पोषित और प्रशिक्षित आतंकियों की घुसपैठ के लिए ही सीमा पर गोलाबारी होती है। जब भारत की ओर से इस गोलाबारी का जवाब दिया जाता है तो सीमांत इलाके युद्ध जैसे हालत से दो–चार होते दिखते हैं। इस दौरान सीमांत इलाकों में रहने वालों के लिए बेहिसाब मुश्किलें खडी हो जाती हैं। उनके घर–बार नष्ट हो जाते हैं। उनके मवेशी मारे जाते हैं और कभी–कभी तो लोगों को भी पाकिस्तान की ओर से होने वाली गोलाबारी का शिकार होना प ?ता है। इस गोलाबारी में होने वाली जन–धन की हानि का तो शायद कभी अंदाजा भी नहीं लगाया गया। सीमा पर तनाव की स्थिति में सीमांत क्षेत्र के लोगों को अक्सर ही सुरक्षित स्थानों में ले जाना प ?ता है। इसी कारण जम्मू और कश्मीर के सीमांत इलाकों में बंकर बनाने का काम जारी ही रहता है। अकेले पुंछ और राजौरी के सीमांत इलाकों में दो–दो सौ और बंकर बनाने की तैयारी हो रही है। समझना कठिन है कि कश्मीर में ऐसे विकट हालात के बाद भी ऐसी कोई योजना क्यों नहीं बनी ताकि पाकिस्तान से लगती सीमा पर रह रहे लोगों को स्थाई रूप से सीमा से दूर बसाया जा सके। ऐसी कोई योजना इसलिए बननी चाहिए, क्योंकि कभी–कभार हजारों लोगों को उनके घरों से निकालकर सुरक्षित इलाकों में ले जाना पडता है। आखिर यह स्थिति युद्ध के हालात से अलग कैसे है ? जैसे जम्मू और कश्मीर के सीमांत इलाकों के लोगों को सीमा से दूर सुरक्षित इलाकों में बसाने की कोई योजना नहीं बनाई जा सकी वैसे ही पाकिस्तान से लगती सीमा को वास्तव में अभेद्य भी नहीं बनाया जा सका। सीमाओं के अभेद्य न होने के कारण ही आतंकियों को भारत में घुसपैठ करने में आसानी होती है। कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि पाकिस्तान प्रायोजित छद्म युद्ध से ढंग से निपटने के बारे में कभी सोचा ही नहीं गया। कम से कम अब तो बिना किसी देरी के सोचा ही जाना चाहिए, क्योंकि हम अपने जवानों के बलिदान का सिलसिला इसी तरह कायम रहते हुए नहीं देख सकते। यदि तत्काल धारा 370 के बारे में पुनर्विचार नहीं हो सकता तो कम से कम जम्मू और कश्मीर के सीमावर्ती इलाके की आबादी को तो वहां से हटाने का काम किया ही जा सकता है। केवल इतना ही पर्याप्त नहीं होगा। इसी के साथ पाकिस्तान से लगती सीमा से कम से कम चार–छह किलोमीटर इलाके को केंद्र शासित क्षेत्र का दर्जा देकर ऐसी व्यवस्था करनी होगी ताकि सीमा पार से आतंकियों की घुसपैठ सचमुच मुश्किल हो जाए। वे घुस भी आएं तो उन्हें सीमांत इलाकों में छिपने–शरण लेने की कोई जगह न मिले। सीमांत इलाके को केंद्र शासित प्रदेश घोषित करने के बाद अगला कदम कश्मीर में आबादी के असंतुलन को दूर करने का होना चाहिए। कश्मीर केवल किसी एक समुदाय का नहीं है और न हो सकता है। हमारे नीति–नियंताओं को यह समझना ही होगा कि जितनी जरूरत पाकिस्तान के खिलाफ कुछ ठोस कदम उठाने की है उतनी ही कश्मीर में भी हालात सुधारने के लिए भी कुछ करने की है और वहां के हालात तब सुधरेंगे जब उन कश्मीरियों का मुगालता दूर होगा जो जोर–जबरदस्ती या फिर पाकिस्तान की मदद से आजादी हासिल कर सकते हैं। यह समझा जाना चाहिए कि जब तक पाकिस्तान कश्मीर में दखल देने की स्थिति में रहेगा वह भारत को चैन नहीं लेने देगा।

सोनिया, राहुल और प्रियंका गांधी की मौजूदगी

ऐतिहासिक दिन पर गांधी आश्रम में प्रार्थना सभा आयोजित की

गांधी परिवार ने महात्मा गांधीजी को श्रद्धांजलि दी डॉ. मनमोहन, अहमद पटेल सहित के नेता भी सभा में शामिल

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

१२ मार्च को दांडी यात्रा के ऐतिहासिक दिन पर राज्य में ५८ वर्ष बाद आयोजित होनेवाली वर्किंग कमेटी की बैठक और अडालज की जन संकल्प रैली में शामिल होने के लिए कांग्रेस के टोप नेता बुधवार को सुबह में अहमदाबाद पहुंचे थे। गांधी आश्रम में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, डॉ. मनमोहन सिंह, प्रियंका गांधी सहित के कांग्रेस के दिग्गज नेताओं ने पूज्य महात्मा गांधी की प्रतिमा को श्रद्धांजलि दी इसके बाद वह प्रार्थना सभा में शामिल हुए थे। दांडी मार्च के ऐतिहासिक दिन पर गांधी आश्रम में मंगलवार को आयोजित की गई प्रार्थना सभा में सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की मौजूदगी सांकेतिक हो गई थी। प्रार्थना सभा के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के साबरमती के संत तुने कर दिया कमाल, रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम सहित के भजनों को आकर्षित किया था। सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की मौजूदगी एक साथ देखकर कांग्रेस के नेताओं से लेकर सामान्य कार्यकर्ताओं में भारी उत्साह का माहौल देखने को मिला। गांधी परिवार के यह तीन नेताओं की मौजूदगी प्रार्थना सभा में सांकेतिक बनी। अपने निश्चित समय से एक घंटे लेट आये कांग्रेस के दिग्गज नेताओं ने गांधी आश्रम से शाहीबाग के शहीद स्मारक जाकर पुलवामा के शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित की गई और तब से सरदार पटेल स्मारक में वर्किंग कमेटी में मौजूद होने के लिए रवाना हो गए। इसके पहले सुबह में करीब ९.५० मिनट पर यूपीए की चेयरपर्सन सोनिया गांधी, पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, पार्टी की महासचिव प्रियंका गांधी, सांसद और सोनिया गांधी के राष्ट्रीय सलाहकार अहमद पटेल सहित के महानुभावों का अहमदाबाद एयरपोर्ट पर आगमन हुआ। यह महानुभावों का प्रदेश अध्यक्ष अमित चावडा, विधानसभा विपक्ष के नेता परेश धानाणी, प्रदेश प्रभारी राजीव सातव, पूर्व प्रमुखों, अर्जुन मोढवाडिया, भरतसिंह सोलंकी, सिद्धार्थ पटेल तथा पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता शक्तिसिंह गोहिल आदि सीनियरों ने स्वागत किया।

लेनदेन पर निगरानी के लिए ७० से ज्यादा चेकिंग

चुनाव की घोषणा बाद आईटी फ्लाइंग स्क्वायड अलर्ट पर

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

लोकसभा चुनाव की घोषणा होने से अब आचारसंहिता लागू हो गई है तब आयकर विभाग और जिला कलेक्टर की फ्लाइंग स्क्वायड भी अब काला धन की भारी हेरफेर सहित सुरक्षा-व्यवस्था के मामले में लैस बन गये है। चुनावों को ध्यान में रखकर शहर में ७० से ज्यादा चेकिंग पोस्ट शुरू की गई है। अहमदाबाद शहर और जिला के क्षेत्रों में वित्तीय हेरफेर और लेनदेन पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी। चुनाव में मतदाताओं को रुपये देकर मनाने के विभिन्न राजनीतिक पार्टियों या उनके लोग-एजेंट के सभी प्रयास विफल बनाने के लिए सक्रिय हुई स्क्वायड चुनाव में मतदाताओं को पैसे बांटने के लिए, शराब बांटना तथा दूसरी उपहार-सौगात देकर यह मामले में विशेष निगरानी रखने के लिए आईटी डिपार्टमेंट और जिला कलेक्टोरेट की फ्लाइंग स्क्वायड अलर्ट पर रखा गया है। विशेष करके अहमदाबाद जिला कलेक्टर और आयकर विभाग की इन्वेस्टिगेशन टीम और फ्लाइंग स्क्वायड द्वारा भी शहर के एसटी स्टेशन, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट तथा कई प्राइवेट लक्जरी के स्टेंड पर विशेष निगरानी रखी गई है। इसके अलावा हाइवे चेकपोस्ट और आंगडियापीढी पर विशेष नजर रखा जाएगा और वहां से होती पैसे की हेराफेरी पर निगरानी रखी जाएगी। शहर में चुनाव के दौरान बड़े प्रमाण में काला धन आ रहे होने से इसे पकड़ने की जिम्मेदारी फ्लाइंग स्क्वायड को सौंपी गई है, जिसकी वजह से स्क्वायड के सदस्य अहमदाबाद में एंट्री की सभी जगहों पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी। इसके अलावा वहां से जा रहे व्यक्तियों में से जिस पर आशंका होगी उनकी जांच करेगी। सूत्रों के बताये अनुसार ईसीआई के चुनाव में नकद की हेराफेरी पर कड़ी निगरानी रखने के लिए कलेक्टर ऑफिस की फ्लाइंग स्क्वायड मैदान में उतारा जाता है। यह चुनाव में बैंक व्यवहारों पर कड़ी निगरानी रखने के लिए कोई निश्चित ढांचा नहीं होने की बात ध्यान में लेने के लिए भी आयोग को बताया गया है हाइवे चेकिंग के दौरान यदि भारी रकम जब्त की जाएंगी तो इंवेस्टिगेशन विंग के अधिकारी केस हाथ में लेकर इन्कमटैक्स विभाग के राज्यस्तर के कंट्रोलरुम को जानकारी देंगे।

फिल्म कलंक का टीजर लॉन्च किया गया

मुझे लगता है मुझ पर लगा

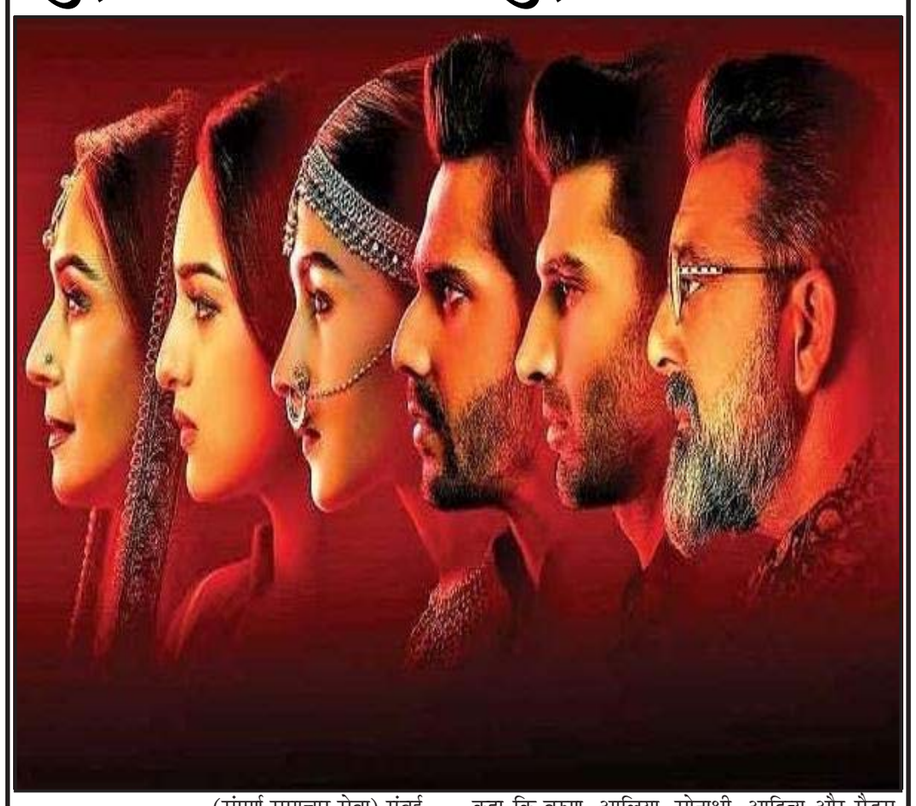

(संपूर्ण समाचार सेवा) मुंबई,

मंगलवार की दोपहर मुंबई में माधुरी दीक्षित, आलिया भट्ट, सोनाक्षी सिन्हा, वरुण धवन, आदित्य रॉय कपूर और संजय दत्त स्टारर फिल्म कलंक का टीजर लॉन्च किया गया। इस मौके पर जब संजय दत्त से सवाल किया गया कि उनकी लाइफ का कोई ऐसा कलंक जिसे वह हमेशा के लिए मिटा देना चाहते हैं। इस तीखे सवाल पर संजय दत्त का बड़ा साधारण और छोटा सा जवाब सबको खामोश कर गया। संजय दत्त में कहा, मैं जेल गया था, यही कलंक है मुझ पर, मुझे लगता है कि अब वह मिट गया है। कलंक के टीजर लॉन्च पर सबसे कम संजय दत्त ने बात की। संजय दत्त से जब भी कोई सवाल किया गया, वह बड़ी शांति से कम शब्दों का चुनाव कर जवाब देते थे। कलंक जैसी फिल्म से जुड़कर खुशी जताते हुए संजय ने कहा कि वरुण, आलिया, सोनाक्षी, आदित्य और मैडम, माधुरीजी के साथ काम बहुत साल बाद किया है। धर्मा प्रॉडक्शन के साथ हमेशा जुड़ा रहना चाहता हूं। इस मौके पर संजय दत्त ने करण जौहर के पिता यश जौहर को याद कर कहा कि मैं जौहर साहब के बहुत करीब था, आज जब करण को आगे बढ़ता हुआ देख रहा हूं तो बहुत गर्व होता है। इवेंट में फिल्म की स्टारकास्ट के साथ निर्देशक अभिषेक बर्मन, निर्माता करण जौहर और साजिद नाडियाडवाला भी मौजूद थे। पूरे इवेंट में सबकी नजर माधुरी दीक्षित और संजय दत्त पर टिकी थी। लगभग २५ साल बाद दोनों किसी स्टेज पर अगल-बगल साथ खड़े थे। निर्माता करण जौहर की फिल्म कलंक १९ अप्रैल को देशभर के सिनेमाघरों में रिलीज.होगी। १९४० के बैकग्राउंड पर बनी इस पीरियड ड्रामा का निर्देशन अभिषेक वर्मन ने किया है।

वरुण, आलिया, सोनाक्षी, आदित्य और माधुरीजी के साथ काम बहुत साल बाद किया है : संजय दत्त

राहुल और प्रियंका ने गुजराती भोजन का आनंद

कांग्रेस के राष्ट्रीय नेताओं ने गुजराती भोजन का मजा लिया

बाजरी की रोटी, बैंगन का भडथा, ऊंधिया, पूरी, जिलेबी, आलू की सब्जी तथा आदि कई व्यंजन का स्वाद लिए

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

शहर के शाहीबाग क्षेत्र में सरदार पटेल स्मारक भवन में आयोजित की गई कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में उपस्थित हुए कांग्रेस के दिग्गज राष्ट्रीय नेताओं ने मंगलवार को गुजराती भोजन का मजा लिया। खुद कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी, प्रियंका और सोनिया गांधी ने भी गुजराती व्यंजन का आनंद लिया। अहमदाबाद में पहुंचे कांग्रेस के राष्ट्रीय नेताओं के लिए आज गुजराती भोजन की विशेष करके विशेष व्यंजन तैयार किए गए। कांग्रेस के नेताओं को बाजरी की रोटी, बैंगन का भडथा, ऊंधिया, पूरी, जिलेबी, आलू की सब्जी तथा आदि कई व्यंजन का स्वाद लिए। कांग्रेसी नेताओं को गुजराती भोजन का मजा लिया और उन्होंने उनकी काफी प्रशंसा की। गुजरात के कई स्थानीय नेताओं ने गुजराती भोजन और व्यंजन आमंत्रित राष्ट्रीय महानुभावों को जानकारी दी गई। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी, प्रियंका और सोनिया गांधी के लिए अलग से भोजन की व्यवस्था की गई। आज के भोजन व्यंजन में कांग्रेस के नेताओं को नोनवेज नहीं देने का निर्णय लिए जाने की वजह से उनको सिर्फ शुद्ध गुजराती भोजन दिया गया। दूसरी तरफ, एक दिन पहले आ चुके कांग्रेस के सांसद और राष्ट्रीय नेता अहमद पटेल सहित के कई नेताओं ने गत दिन रात को शहर के पुराने और लोकप्रिय माणेकचौक में भाजीपाऊं और पीजा का स्वाद लिया। गुजरात के मेहमान बने कांग्रेस के नेताओं को प्रदेश कांग्रेस के नेता अहमदाबाद में देर रात को खाने के लिए माणेकचौक ले गये थे। सांसद अहमद पटेल, प्रियंका चतुर्वेदी, जयवीर शेरगील, प्रदेश अध्यक्ष अमित चावडा, विपक्ष नेता परेश धानाणी, विधायक शैलेष परमार सहित के दिल्ली और अन्य राज्यों से आये कांग्रेस के नेताओं ने गुजरात के नेताओं के साथ भाजीपाऊं, ढोसा, पीजा और फालुदा का स्वाद लिया।

चुनाव आचारसंहिता भंग नहीं हो इस पर नजर रखी

आयोग द्वारा कांग्रेस के नेता की गाड़ियों का भी मॉनिटरिंग

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

गत रविवार को चुनाव आयोग द्वारा लोकसभा चुनाव का कार्यक्रम घोषित करने के साथ ही पूरे देश में आचारसंहिता लागू हो गई है। ऐसी परिस्थिति में मंगलवार को आयोजित हुई कांग्रेस की वर्किंग कमेटी तथा अडालज की जनसंकल्प रैली में शामिल होने के लिए आये कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की गाड़ी का चुनाव आयोग द्वारा मॉनिटरिंग किया गया। चुनाव आयोग के अधिकारियों द्वारा यह कार्यक्रमों में कहीं चुनाव आचारसंहिता की गाइडलाइंस का भंग भंग नहीं हो इस पर कड़ी निगरानी रखी गई थी। मंगलवार को सुबह में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, डॉ. मनमोहनसिंह, प्रियंका गांधी आदि का अहमदाबाद में आगमन होने के बाद यह महानुभावों को विशेष बस में गांधी आश्रम जाने के लिए रवाना हुए। चुनाव आयोग द्वारा गांधी आश्रम में कार्यक्रम का मॉनिटरिंग किया गया। जिसमें चुनाव आयोग की चार टीम द्वारा विडियोग्राफी की गई थी। जिसमें कांग्रेस के नेताओं की गाडी, गाडी पीछे के पोस्टर और गाडी नंबर रजिस्ट्रेन आदि शामिल है। इस दौरान मंगलवार को आयोजित हुई जन संकल्प रैली के लिए कांग्रेस के स्थानीय नेताओं तथा कार्यकर्ताओं द्वारा शहरभर में जगह-जगह होर्डिंग्स तथा बैनर और झंडा लगाये गये। अडालज के त्रिमंदिर की तरफ जाते रास्ते की दोनों ओर सैकड़ों की संख्या में कांग्रेस के बैनर और झंडा लगे हुए थे। चुनाव आयोग के अधिकारियों द्वारा यह कार्यक्रमों में कहीं चुनाव आचारसंहिता की गाइंडलाइंस का भंग भंग नहीं हो इस पर कड़ी निगरानी रखी गई थी। मंगलवार को सुबह में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, डॉ. मनमोहनसिंह, प्रियंका गांधी आदि का अहमदाबाद में आगमन होने के बाद यह महानुभावों को विशेष बस में गांधी आश्रम जाने के लिए रवाना हुए।हालांकि चुनाव आयोग द्वारा आचारसंहिता का सख्ती से पालन किए जाने की वजह से गत दिन म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के एस्टेट विभाग द्वारा यह सभी होर्डिंग्स, बैनर हटाये गये। जिसकी वजह से जन संकल्प रैली की रौनक फिक्की हो गई थी। म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के शासकों ने कांग्रेस के होर्डिंग्स, बैनर आदि हटा लेने को आचारसंहिता लागू होने से यह काम किया गया।

प्रियंका ने प्रोटोकॉल बनाए महासचिवों साथ बैठी

पहली बार गांधी परिवार एक साथ दिखाई दिए है

हमारे नेता को सक्रिय रखने के लिए आभार

५८ वर्ष बाद गुजरात में हो रही कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में हिस्सा लेने के लिए आये गांधी परिवार ने मंगलवार को सुबह में गांधी आश्रम की मुलाकात की। जहां राहुल गांधी ने आश्रम की विजिटर बुक में लिखा कि, गांधी आश्रम काफी प्रेरणादायक स्थल है। हमारे नेता को सक्रिय रखने के लिए आभार। सोनिया गांधी ने भी महात्मा गांधी की प्रतिमा को श्रद्धांजलि अर्पित करके आश्रम की मुलाकात लेकर विजिटर बुक में महात्मा गांधी की प्रेरणा विषय में लिखा था।

प्रियंका ने प्रोटोकॉल बनाए रखकर महासचिवों के साथ बैठी

५८ वर्ष बाद मंगलवार को अहमदाबाद में कांग्रेस की वर्किंग कमेटी की बैठक आयोजित की गई थी, जिसमें हिस्सा लेने के लिए सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी अहमदाबाद पहुंचे थे। गुजरात कांग्रेस द्वारा सुबह में गांधी आश्रम में विशेष प्रार्थना सभा आयोजित की गई थी। जिसमें प्रियंका गांधी ने प्रोटोकॉल बनाए रखकर विभिन्न राज्य के कांग्रेस महासचिव की चौथी लाइन में बैठी थी। गांधी आश्रम में आयोजित की गई प्रार्थना सभा में राहुल गांधी और प्रियंका गांधी, सोनिया गांधी और मनमोहनसिंह प्रथम पंक्ति में बैठे थे। लेकिन प्रियंका गांधी, सोनिया गांधी और राहुल के पास बैठने के बजाय महासचिवों के साथ चौथी लाइन में बैठी थी। इसके अलावा जबकि सोनिया -राहुल और प्रियंका एयरपोर्ट से गांधीआश्रम आने के लिए निकले तब एक साथ बस में बैठे थे।

पहली बार गांधी परिवार एक साथ दिखाई दिए

अहमदाबाद में आजादी की लड़ाई के समय महात्मा गांधी द्वारा स्थापित साबरमती आश्रम में हो सकता है यह पहला मौका होगा कि गांधी परिवार के ३ सदस्य सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी और उनके साथ पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने एक साथ मुलाकात लेकर आश्रम में प्रार्थना सभा में उपस्थित हुए। सामान्य रूप से सोनिया गांधी उनके पति राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे तब या कोई अन्य प्रसंग पर साबरमती आश्रम की मुलाकात पर आये होंगे लेकिन आज गांधी परिवार के सभी तीन सदस्य एक साथ गांधीजी के आश्रम में पहुंचे हो ऐसा पहली बार हुआ है। कांग्रेस की कारोबारी शुरू हो उसके पहले कांग्रेस के नेताओं ने आश्रम में जाकर महात्मा गांधी के आशीर्वाद लिया। गांधी परिवार ने शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की

अहमदाबाद में मंगलवार को कांग्रेस की वर्किंग कमेटी की बैठक चल रही है तब कांग्रेस के नेताओं ने शाहीबाग में स्थित शहीद स्मारक में जाकर वीर शहीद जवानों के प्रतिक को पुष्पांजलि अर्पित की। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी सहित के नेताओं ने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करके भाजपा को और अन्य को स्पष्ट राजनीतिक संदेश दिया कि, शहीदों को नमन और पुष्पांजलि अर्पित यह सिर्फ भाजपा का ही अधिकार नहीं है। कांग्रेस भी वीर शहीद जवानों के लिए भाजपा जितना और इसके से भी ज्यादा सम्मान करते हैं। क्योंकि भाजपा की कारोबारी पहले इस तरीके से वीर शहीद जवानों को याद नहीं किया गया है यह राजनीतिक सूत्रों ने दावा किया।

शहीदों की याद में सभी कांग्रेसी नेताओं ने दो मिनट का मौन रखा गया

मंगलवार को अहमदाबाद में शाहीबाग सरदार स्मारक भवन में आयोजित की गई कांग्रेस की राष्ट्रीय कारोबारी की बैठक शुरू हो इसके पहले कांग्रेस के नेताओं ने पुलवामा आतंकी हमले में शहीद हुए ४४ जवानों की शहादत की याद में और उनके आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के अलावा सभी कांग्रेसी नेताओं ने शहीदों की याद में दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि देने के लिए शामिल हुए। इसके अलावा बैठक पहले कांग्रेस के नेताओं ने जवानों के शहीद स्मारक में जाकर पुष्पांजलि अर्पित की।

दांडी मार्च के इतिहास को ८९ वर्ष पूरा हुआ यह भी ऐतिहासिक प्रसंग

आज से ८९ वर्ष पहले १२ मार्च, १९३० को महात्मा गांधीजी ने अंग्रेज शासकों द्वारा नमक पर लगाया गये टैक्स के विरोध में जन आंदोलन के लिए अहमदाबाद में अपने साबरमती आश्रम से ७२ अनुयायी के साथ दांडी मार्च प्रारंभ की थी। ६ अप्रैल को गांधीजी ने दांडी गाम के समुद्र किनारे पर नमक पकाकर थोड़ा नमक लेकर कानून का भंग करके गिरफ्तारी दी। जिसकी वजह से देश में अंग्रेजी शासकों के खिलाफ आजादी की लड़ाई जोरशोर से शुरू हुई थी और जन आंदोलन की वजह से आंदोलन में तेजी आई। यह ऐतिहासिक प्रसंग को मंगलवार को १२ मार्च, २०१९ को ८९ वर्ष पूरा हुआ है, यह भी ऐतिहासिक घटना बनी।

राहुल ने हार्दिक पटेल को कांग्रेस का खेस पहनाया

पाटीदारों के आंतरिक विरोध के बीच हार्दिक कांग्रेस में शामिल

हार्दिक ने कांग्रेस में शामिल होने के बाद भाषण में भाजपा और मोदी पर निशाना : चौकीदार चोर है के नारे लगाये

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

पाटीदार आरक्षण आंदोलन से विवादों में आये हार्दिक पटेल आखिर में कांग्रेस में शामिल हो गये है। अहमदाबाद में कांग्रेस महासमिति की (सीडबल्युसी) बैठक के अवसर पर विधिवत रूप से हार्दिक का कांग्रेस में एंट्री हुआ। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने हार्दिक पटेल को खेस पहनाकर इसे कांग्रेस में स्वागत किया गया। कांग्रेस में शामिल होने के बाद हार्दिक पटेल ने अडालज त्रिमंदिर में विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए अपने संबोधन में भाजपा और मोदी सरकार पर निशाना साधा और एक समय में प्रधानमंत्री मोदी को लेकर चौकीदार चोर है के नारे मौजूद लोगों के से लगवाये गये। दूसरी तरफ, हार्दिक पटेल कांग्रेस में शामिल होने से पाटीदारों में आंतरिक विरोध शुरू हो गया है। एसपीजी के लालजी पटेल ने भी खुला विरोध करके हार्दिक को अब चुनाव जीतकर बताये यह चुनौती दी है। दूसरी तरफ, हार्दिक पटेल के कांग्रेस में शामिल होने का यह समीकरण गुजरात कांग्रेस को लाभ कराये यह प्रथम दृष्टि में लग

रहा है क्योंकि अब आगामी लोकसभा चुनाव में पाटीदार के मत मिलने की अपेक्षा है। लेकिन यहां से गुजरात कांग्रेस में दूसरी एक विवाद रेखा है जिसके एक तरफ हार्दिक पटेल और दूसरी तरफ अल्पेश ठाकोर है। दोनों युवा नेता है और दोनों महत्वाकांक्षी है जिसकी वजह से गुजरात कांग्रेस में सत्ता की जंग ज्यादा होगी यह निश्चित है। अल्पेश ठाकोर विधायक बनने के बाद इसे कांग्रेस महासमिति ने बिहार की जिम्मेदारी दी गई। लेकिन गुजरात में परप्रांतियों पर हमला शुरू हुआ। यह विवाद में अल्पेश का नाम सामने आने पर यूपी और बिहार में अल्पेश की वजह से कांग्रेस की स्थिति खराब हो गई थी। अल्पेश अभी बिहार का सह-प्रभारी है लेकिन इसे महाराष्ट्र का प्रभारी बनना है। जबकि अनधिकृत रूप से सूत्रों के अनुसार हार्दिक की इच्छा महाराष्ट्र कांग्रेस के प्रभारी बनने वाले है। गुजरात बाहर कांग्रेस का चेहरा बनने के लिए हार्दिक और अल्पेश के बीच स्पर्धा शुरू हो गई है।

हार्दिक पटेल लोकसभा का चुनाव जीतेंगे : राहुल

चुनाव में जीतने के लिए कांग्रेस वर्किंग कमेटी में रणनीति तय

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

वर्ष १९६१ बाद यानी कि, ५८ वर्षों बाद गुजरात में मंगलवार को कांग्रेस पार्टी की ऐतिहासिक राष्ट्रीय कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक बैठक हुई थी। जिसमें गुजरात सहित देश की लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी की जीत को लेकर रणनीति तय हुई थी। बैठक में देश में बेरोजगारी, किसानों की कर्ज माफी, महिलाओं की सुरक्षा, देश के विकास सहित के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष गांधी ने बताया कि, लोकसभा के आगामी चुनाव में सहित के मुद्दे जनता के बीच ले जाकर मत मांगेंगे। मंगलवार को कांग्रेस में शामिल हुए हार्दिक पटेल के मुद्दे पर पूछे गये एक प्रश्न के जबाव में राहुल गांधी ने स्पष्ट शब्दों में बताया कि, हार्दिक पटेल लोकसभा का चुनाव जीतेंगे। राहुल गांधी ने साफ संकेत दिया है कि, कांग्रेस हार्दिक को लोकसभा की टिकट देने वाली है, इसी वजह से इसके जीतने की बात की। लोकसभा चुनाव के पहले मंगलवार को हुई कांग्रेस की महत्वपूर्ण यह राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी के अलावा, महासचिव प्रियंका गांधी, सोनिया गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहनसिंह, कांग्रेस के वरिष्ठ राष्ट्रीय नेताओं में पी. चिदम्बरम, मल्लिकार्जुन खडगे, गुलामनबी आजाद, अहमद पटेल, अशोक गहलोत, ज्योतिरादित्य सिंधिया, सचिन पायलोट सहित ५० से ज्यादा राष्ट्रीय नेता मौजूद हुए। कांग्रेस के सभी नेताओं ने मंगलवार को सुबह में साबरमती गांधी आश्रम में पहुंचकर प्रार्थनासभा में उपस्थित होने के बाद पुलवामा में शहीद हुए जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित और इसके बाद शाहीबाग के सरदार पटेल स्मारक भवन में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में पहुंचे। जिसमें लोकसभा चुनाव को लेकर महत्व की रणनीति, निर्णयों, और रूपरेखा सहित की कूटनीति विचार-विमर्श किया गया। जसमें गुजरात सहित देश की लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी की जीत को लेकर रणनीति तय हुई थी। बैठक में देश में बेरोजगारी, किसानों की कर्ज माफी, महिलाओं की सुरक्षा, देश के विकास सहित के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष गांधी ने बताया कि, लोकसभा के आगामी चुनाव में सहित के मुद्दे जनता के बीच ले जाकर मत मांगेंगे। मंगलवार को कांग्रेस में शामिल हुए हार्दिक पटेल के मुद्दे पर पूछे गये एक प्रश्न के जबाव में राहुल गांधी ने स्पष्ट शब्दों में बताया कि, हार्दिक पटेल लोकसभा का चुनाव जीतेंगे।बैठक में लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत और केन्द्र में सत्ता हासिल करने की रणनीति भी तय की गई थी।

कांग्रेस कारोबारी की बैठक के तहत कांग्रेस के कई दिग्गज नेता गुजरात पहुंचे। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी का विशेष रूप से स्वागत किया गया। (संपूर्ण समाचार सेवा)

वोटिंग के लिए मोदी ने विपक्षी नेताओं किया टैग

मोदी ने राहुल, ममता समेत नेता को ट्विटर पर किया टैग

ट्वीट में टैग कर सभी नेताओं से मतदाताओं को जागरूक कर वोट देने के लिए प्रोत्साहित करने की अपील की

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली,

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को ट्विटर पर विपक्षी नेताओं को दिलचस्प अंदाज में सरप्राइज दिया। लोकसभा चुनावों के पहले चरण के मतदान से पहले मोदी ने कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी, तृणमूल कांग्रेस अध्यक्ष ममता बनर्जी समेत विपक्ष के सभी बड़े नेताओं को ट्वीट में टैग करते हुए लोगों को वोटिंग के लिए प्रेरित करने की अपील की। उन्होंने इसके साथ भी फिल्म, खेल, उद्योग और मीडिया जगत की हस्तियों से भी यह अपील दोहराई। पीएम ने सिलसिलेवार ट्वीट में टैग कर सभी नेताओं से मतदाताओं को जागरूक कर वोट देने के लिए प्रोत्साहित करने की अपील की। पीएम ने इसी से संबंधित एक ब्लॉग भी लिखा और इसे अपने ट्विटर हैंडल से शेयर किया। पीएम ने ट्वीट किया, मैं राहुल गांधी, ममता बनर्जी, शरद पवार, मायावती, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव और एमके स्टालिन से अपील करता हूं कि लोकसभा चुनावों में लोगों को मतदान के लिए जागरूक करें। मतदान के लिए बड़ी संख्या का आना हमारे लोकतांत्रिक ढांचे की मजबूती के लिए बहुत अच्छा रहेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने एक अन्य ट्वीट में इसी तरह का संदेश देते हुए चंद्रबाबू नायडू, एचडी कुमारस्वामी, नवीन पटनायक और वाईएसआर जगनमोहन रेड्डी को भी टैग किया। एक अन्य ट्वीट में पीएम ने नीतीश कुमार, सिक्किम के सीएम पवन चामलिंग और रामविलास पासवान को टैग कर मतदान के लिए लोगों को जागरूक करने की अपील की। पीएम ने सिर्फ राजनीतिक हस्तियों को ही मतदान के लिए लोगों को उत्साहित करने की अपील नहीं की। नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी, पूर्व आईपीएस और अब राज्यपाल किरन बेदी, साउथ के मशहूर फिल्म ऐक्टर मोहनलाल और सुदर्शन पटनायक को भी टैग कर ऐसी ही अपील की। खेल जगत की दिग्गज हस्ती किदांबी श्रीकांत, ओलिंपिक मेडल विजेता योगेश्वर दत्त, सुशील कुमार, पीवी सिंधु को भी प्रधानमंत्री ने मतदान के लिए जागरूक करने में अपनी भूमिका निभाने की अपील की। प्रधानमंत्री मोदी ने देश के दिग्गज आध्यात्मिक गुरुओं से भी लोकतंत्र के महापर्व में अपनी भूमिका निभाने के लिए अपील की। पीएम ने सद्गुरु, श्री श्री रविशंकर और रामदेव को टैग करते हुए लिखा, आपके जैसे आध्यात्मिक शख्सियत अपने शब्दों और कृत्यों से बहुतों को प्रभावित करते हैं। मैं आपसे भी गुजारिश करता हूं कि आप लोगों को मतदान के लिए जागरूक करें। इसके साथ ही उद्योग जगत की नामी हस्ती आनंद महिंद्रा, रतन टाटा और आशीष चौहान से भी पीएम ने ऐसी ही अपील की। उत्तर-पूर्व के मुख्यमंत्रियों और नेताओं को भी टैग कर प्रधानमंत्री ने लोकतंत्र में भागीदारी सुनिश्चित करने की अपील की। उन्होंने सर्वानंदन सोनोवाल, हिमंत बिस्वा, कोनार्ड संगमा से ऐसी ही अपील की। प्रधानमंत्री ने पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को भी ट्वीट करते हुए लिखा कि सम्मानित प्रणब मुखर्जी आप देश की महत्वपूर्ण राजनीतिक शख्सियत हैं। आप एक वोट की कीमत समझते हैं। मैं आपसे अपील करता हूं कि लोकतंत्र के पर्व में अधिकतम भागीदारी के लिए आप मतदान की अपील करें।

बॉलिवुड स्टार्स के लिए फिल्मी ट्वीट

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली,

प्रधानमंत्री मोदी ने बॉलिवुड स्टार्स से भी ट्वीट कर अधिक से अधिक संख्या में लोगों को मतदान करने के लिए प्रेरित करने की अपील की। पीएम ने रणवीर सिंह को फिल्मी अंदाज में टैग करते हुए लिखा, अपने युवा दोस्तो रणवीर सिंह, वरुण धवन और विकी कौशल से कहना चाहता हूं कि बड़ी संख्या में युवा आपको सराहते हैं। टाइम है कि आप उनसे कहें, अपना टाइम आ गया है। यह हाई जोश का समय है कि आप नजदीकी मतदान केंद्र तक जाकर वोट करें। इसके साथ ही पीएम ने अनुष्का शर्मा, दीपिका पादुकोण और आलिया भट्ट से भी ऐसी ही अपील की।

अरुणाचल के ह्यूलियांग के एक बूथ पर एक मतदाता

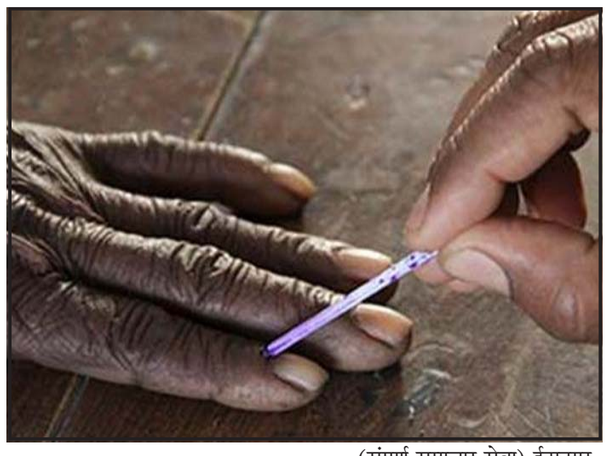

(संपूर्ण समाचार सेवा) ईटानगर,

भारत के लोकतंत्र की यह सबसे बड़ी खूबी है कि यहां एक-एक वोट कीमती है। यही वजह है कि चुनाव आयोग ने ऐसी जगह पर भी पोलिंग बूथ बनाया है, जहां पर सिर्फ एक वोटर है। अरुणाचल प्रदेश के ह्यूलियांग विधानसभा के एक बूथ पर सिर्फ एक मतदाता है जो ११ अप्रैल को राज्य में होने वाले विधानसभा और लोकसभा चुनाव के लिए वोट डालेंगी। पिछले लोकसभा चुनाव में इसी बूथ पर सिर्फ दो वोटरों ने वोट डाला था। अरुणाचल ईस्ट लोकसभा क्षेत्र में आने वाले इस बूथ के बारे में राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी ने आधिकारिक रूप से भी सूचना दी थी। उन्होंने कहा था कि मालोगाम विधानसभा क्षेत्र के एक बूथ पर केवल एक वोटर है। इसके लिए वहां एक अस्थायी पोलिंग स्टेशन निर्मित किया गया है। यह भारत का सबसे छोटा पोलिंग बूथ है। मंगलवार को अरुणाचल प्रदेश बीजेपी ने भी ट्वीट कर इसी तथ्य का हवाला देते हुए एक-एक वोट के कीमती होने की बात कही है।

कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने मुलाकात की

भीम आर्मी चीफ चंद्रशेखर लड़ सकते है मोदी के खिलाफ चुनाव

पहले तो संगठन से मजबूत प्रत्याशी उतारने का प्रयास करूंगा, प्रत्याशी नहीं मिलने पर मैं स्वयं लड़ूंगा : चंद्रशेखर

(संपूर्ण समाचार सेवा) मेरठ,

भीम आर्मी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर ने कहा है कि वह आगामी लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ चुनाव लड़ेंगे। चंद्रशेखर ने कहा कि वह अपने संगठन से पीएम के खिलाफ मजबूत कैंडिडेट उतारेंगे और कैंडिडेट नहीं मिलने पर वह खुद मैदान में उतरेंगे। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा और ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बुधवार को चंद्रशेखर से मुलाकात की। चंद्रशेखर ने कहा, मैं लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ चुनाव मैदान में उतरूंगा। पहले तो अपने संगठन से कोई मजबूत प्रत्याशी उतारने का प्रयास करूंगा और प्रत्याशी नहीं मिलने पर मैं स्वयं मोदी के खिलाफ चुनाव लड़ूंगा। चंद्रशेखर ने बुधवार को यहां जारी एक विडियो में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर निशाना साधते हुए कहा कि मंगलवार को देवबंद में उनकी पदयात्रा सीएम के इशारे पर रोकी गई थी। उन्होंने कहा,हमारे पास पदयात्रा की अनुमति थी। लेकिन प्रशासन और सरकार इस बात को लेकर झूठ फैला रहे हैं। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा और ज्योतिरादित्य सिंधिया मेरठ के हॉस्पिटल में इलाज करा रहे चंद्रशेखर से मिले। गौरतलब है कि भीम आर्मी के प्रमुख चंद्रशेखर को पुलिस ने मंगलवार को देवबंद में आचार संहिता उल्लंघन के आरोप में हिरासत में ले लिया गया था। बाद में उनकी तबीयत खराब होने पर मेरठ इलाज के लिए भेज दिया गया था। चंद्रशेखर ने कहा,१५ मार्च को दिल्ली में बहुजन हुंकार रैली होगी। इसमें बड़ी संख्या में लोग भाग लेंगे। चाहे जो इसे रोकने का प्रयास करे, अब यह रुकेगा नहीं। लोकसभा चुनाव में मायावती को पूरा समर्थन दिया जाएगा। अखिलेश यादव को अभी प्रमोशन में आरक्षण के मुद्दे पर अपना रुख साफ करना होगा। चंद्रशेखर ने कहा, मैं लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ चुनाव मैदान में उतरूंगा। पहले तो अपने संगठन से कोई मजबूत प्रत्याशी उतारने का प्रयास करूंगा और प्रत्याशी नहीं मिलने पर मैं स्वयं मोदी के खिलाफ चुनाव लड़ूंगा। चंद्रशेखर ने बुधवार को यहां जारी एक विडियो में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर निशाना साधते हुए कहा कि मंगलवार को देवबंद में उनकी पदयात्रा सीएम के इशारे पर रोकी गई थी। उन्होंने कहा,हमारे पास पदयात्रा की अनुमति थी।समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायम सिंह अपने बयान से लोगों में भ्रम पैदा कर रहे हैं। बता दें कि चंद्रशेखर ने अभी हाल में ऐलान किया था कि उनका संगठन लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मंत्री स्मृति इरानी के खिलाफ चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशी का समर्थन करेगा।

गिलगित ऐक्टिविस्ट का एयर स्ट्राइक को लेकर दावा

आतंकियों के शव को खैबर पख्तूनख्वा शिफ्ट किया गया

एयर स्ट्राइक के बाद पाक सैन्य अधिकारियों ने २०० से अधिक आतंकियों को दफनाने की बात कबूल की है

(संपूर्ण समाचार सेवा) वॉशिंगटन ,

अमेरिका में रह रहे गिलगिट ऐक्टिविस्ट सेंगे हसनान सेरिंग ने बालाकोट एयर स्ट्राइक को लेकर चौंकाने वाला खुलासा किया है। सेरिंग ने एक विडियो शेयर करते हुए दावा किया है कि स्थानीय उर्दू अखबारों में छपी खबर के अनुसार, स्ट्राइक के बाद २०० आतंकियों के शव को पाक सेना ने बालाकोट से खैबर पख्तूनख्वा पहुंचाने का काम किया था। हालांकि इस विडियो की हकीकत क्या है, इसकी अभी तक पुष्टि नहीं हो पाई है। सेरिंग ने एक विडियो भी ट्विटर पर शेयर किया। विडियो कैप्शन में उन्होंने लिखा, भारत के एयर स्ट्राइक के बाद पाकिस्तानी सैन्य अधिकारियों ने २०० से अधिक आतंकियों को दफनाने की बात कबूल की है। धिकारी ने आतंकियों को मुजाहिद बताते हुए अल्लाह से मिले विशेष सौगात की बात करते हुए कहा कि ये लोग पाकिस्तान सरकार के लिए दुश्मन के खिलाफ काम कर रहे थे। उनके परिवारों को सहयोग देने की बात की। विडियो में कुछ पाक अधिकारियों को रोते हुए बच्चों को चुप कराते देखा जा सकता है। पीछे किसी की आवाज आ रही है जिसमें एक शख्स कह रहा है कि यह अल्लाह का करम है। हमारे २०० बंदों को यह मौका मिला। हालांकि, इस विडियो की हम अपनी तरफ से पुष्टि नहीं कर सकते हैं। बता दें कि बालाकोट में आतंकी कैंपों के तबाह होने की खबरों का पाकिस्तान लगातार खंडन करता रहा है। दूसरी तरफ भारत ने इस एयर स्ट्राइक में २०० से अधिक आतंकियों के मारे जाने और आतंकी कैंप के बुरी तरह से तबाह होने की बात कही है। बालाकोट में जैश का प्रमुख आतंकी ट्रेनिंग कैंप रहा है। पुलवामा हमले का सूइसाइड बॉम्बर को बालाकोट से ही ट्रेनिंग मिली थी।

कांग्रेस कारोबारी की बैठक के तहत कांग्रेस के कई दिग्गज नेता गुजरात पहुंचे। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी का विशेष रूप से स्वागत किया गया। (संपूर्ण समाचार सेवा)

मेट्रो रेल सेवा में बाधा आने से सैकड़ों यात्री फंस गये

मेट्रो रेल सेवा में टेक्नीकल गड़बड़ी होने से ठप हो गई

नौ दिन में मेट्रो रेल की सेवा दूसरी बार ठप : हालांकि, एक्सपर्ट टीम द्वारा समाधान करके फिर सेवा चालू हुई

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

अहमदाबाद मेट्रो रेल नियमित रूप से शुरू होने के दूसरे दिन ही ठप हो गई इसके बाद बुधवार को ९वें दिन फिर से दूसरी बार ठप होने की चौंकाने वाली घटना सामने आने पर मेट्रो रेल की सेवा फिर एक बार विवाद में है। मेट्रो रेल की सेवा बुधवार को टेक्नीकल गड़बड़ी होने की वजह से फिर एक बार ठप हो जाने से सैकड़ों यात्री फंस गये। मंगलवार को सुबह में १० बजे एपरल पार्क के पास ट्रेन दो घंटे ठप हो जाने से स्टेशन पर मौजूद यात्रियों को वापस जाना अनिवार्य हो गया। हालांकि, एक्सपर्ट टीम द्वारा समाधान करके फिर सेवा चालू करने से यात्रियों ने राहत महसूस की। अहमदाबाद शहर में अभी तो मेट्रो रेल को सिर्फ ९ दिन का समय बीत चुका है तब कम समय में दो बार ट्रेन ठप हो जाने से यात्री परेशान हो गये है। मेट्रो तीन की फेज वन का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ४ मार्च को ट्रेन में यात्रा करके उद्घाटन किया। इसके कुछ ही दिनों में ९ मार्च को ट्रेन ठप हो गई थी और यात्री फंस गये थे। बुधवार को फिर एक बार मेट्रो रेल की सेवा ठप हो गई, जिसकी वजह से फ्री ट्रायल यात्रा करने के इच्छुक लोग फंस गये। सामान्य रूप से अपने शेड्यूल के अनुसार रवाना होने वाली मेट्रो ट्रेन सुबह में दस बजे रवाना होने वाली थी।लोग उत्साह में थे, लेकिन दो घंटे तक ट्रेन नहीं चलेगी इस ऐलान की वजह से यात्रियों को वापस जाना पड़ा। ९ मार्च को मेट्रो ट्रेन में एसी की सिस्टम बंद हो गई थी। जिसकी वजह से ट्रेन को ८ मिनट तक रोकना पड़ा। सेंट्रल एसी बंद हो जाने से ट्रेन में सुबह में यात्री डर गये। अहमदाबाद मेट्रो ने पूर्व क्षेत्र के लोगों को आकर्षित किया है। रोजाना हजारों की संख्या में लोग मेट्रो ट्रेन की यात्रा करने के लिए लाइनें लगा रहे हैं। हाल में सुबह में १० से शाम के ४बजे तक १५ ट्रीप चलाये जाते हैं। जिसमें रोजाना दस हजार यात्री यात्रा कर रहे हैं। मेट्रो रेल में १४ मार्च तक निःशुल्क यात्रा कर सकेंगे। इसके बाद वस्त्राल गाम से एपरल पार्क तक का किराया १० रुपया वसूल किया जाएगा।

अब अन्य न्यायाधीश के समक्ष सुनवाई होगी

हार्दिक के चुनाव लड़ने की रिट न्यायाधीश ने नोट बीफॉर मी किया

ऑफिस में तोड़फोड़ के केस में विसनगर कोर्ट द्वारा सुनाई गई सजा के आदेश के खिलाफ स्टे की मांग की है

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

हार्दिक पटेल ने लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए विसनगर कोर्ट का सजा का आदेश स्थगित करने के लिए हाईकोर्ट में अर्जी की थी। जिसमें बुधवार को हुई सुनवाई में हाईकोर्ट के जस्टिस आरपी. धोलारीया ने नोट बीफॉर मी किया, अब यह अर्जी हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस द्वारा अन्य कोर्ट में सुनवाई के लिए भेजा जाएगा। विसनगर विधायक की ऑफिस में तोड़फोड़ के केस में हार्दिक पटेल ने विसनगर कोर्ट के दो वर्ष की सजा सुनाने के फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट में अर्जी दी थी। हार्दिक आगामी लोकसभा चुनाव लड़ने की वजह से उसने यह अर्जी दी थी। विसनगर केस में हार्दिक पटेल को दो वर्ष की सजा मिली है। रिप्रेजन्टेशन ऑफ पीपल्स एक्ट अनुसार जेल की सजा भुगत रहे व्यक्ति को चुनाव लड़ने में कानूनी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। हार्दिक बाधा बिना लोकसभा चुनाव लड़ सके इसके लिए हाईकोर्ट में अर्जी करके बताया कि, हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट की सजा के आदेख खिलाफ स्टे लगाना चाहिए, क्योंकि, इसके संवैधानिक और लोकसभा चुनाव लड़ने के अधिकार छीनने जैसा है, जिसकी वजह से हाईकोर्ट ने अर्जीकर्ता की मांग को मंजूर करना चाहिए। हालांकि हाईकोर्ट के जस्टिस आरपी ढोलरिया ने हार्दिक की यह अर्जी मंगलवार को नोट बीफॉर मी किया था। अब हार्दिक की अर्जी पर अन्य न्यायाधीश की कोर्ट में सुनवाई की जाएगी। उल्लेखनीय है कि, पाटीदार आरक्षण आंदोलन के दौरान मेहसाणा के विसनगर के विधायक ऋषिकेश पटेल की ऑफिस में की गई तोड़फोड़ मामले में विसनगर कोर्ट ने हार्दिक पटेल, लालजी पटेल और एके. पटेल को यह केस में दोषी ठहराया गया था। विसनगर विधायक की ऑफिस में तोड़फोड़ के केस में हार्दिक पटेल ने विसनगर कोर्ट के दो वर्ष की सजा सुनाने के फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट में अर्जी दी थी। हार्दिक आगामी लोकसभा चुनाव लड़ने की वजह से उसने यह अर्जी दी थी। विसनगर केस में हार्दिक पटेल को दो वर्ष की सजा मिली है। रिप्रेजन्टेशन ऑफ पीपल्स एक्ट अनुसार जेल की सजा भुगत रहे व्यक्ति को चुनाव लड़ने में कानूनी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। हार्दिक बाधा बिना लोकसभा चुनाव लड़ सके इसके लिए हाईकोर्ट में अर्जी करके बताया कि, हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट की सजा के आदेख खिलाफ स्टे लगाना चाहिए, क्योंकि, इसके संवैधानिक और लोकसभा चुनाव लड़ने के अधिकार छीनने जैसा है, जिसकी वजह से हाईकोर्ट ने अर्जीकर्ता की मांग को मंजूर करना चाहिए।इस केस में कोर्ट ने तीन आरोपी को दो-दो वर्ष की सजा तथा ५०-५० हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया था। सजा बाद कोर्ट ने तीनों आरोपियों को शर्त के तहत जमानत पर बरी किया गया था। इस केस में कोर्ट में पेश नहीं हुए हार्दिक पटेल और लालजी पटेल के खिलाफ कोर्ट ने गिरफ्तारी वारंट भी इश्यू किया था।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 and Published from TF-01, Nanakram Super Market,Ramnager,Sabarmati, Ahmedabad - 380 005.Editor : MANOJKUMAR CHAMPKLAL SHAH